आपका बंटी के पात्र एवं चरित्र-चित्रण

उपन्यास मानव जीवन को समग्रता में चित्रित करता है। उसकी सार्थकता, वास्तविकता इस पर निर्भर करती है कि उपन्यासकार ने चरित्रों को कितने जीवंत, सशक्त यथार्थ और कलात्मकता से प्रस्तुत किया है। पात्रों का सहज और प्राणवान हो उपन्यास के चरित्र की प्रमुख विशेषता है। पात्र इतने सजीव होने चाहिए कि पाठक उससे तादात्मय स्थापित कर सके। उससे आत्मसात हो सके जैसे वे उसके आसपास हों।

'आपका बंटी' के सभी पात्र इन विशेषताओं को पूरा करते हैं। वे पराये नहीं अपने लगते हैं। वह चाहे बंटी, शकुन, अजय या डॉ. जोशी हो या फूफी। सभी पात्र जाने-पहचाने, देखे हुए आसपास के जीते चरित्र लगते हैं। 'बंटी' केवल उपन्यास का नहीं बल्कि वर्तमान समाज में विघटित परिवारों का बंटी लगता है। अर्थात् ऐसा बालक जो आज हमारे आधुनिक एकल परिवारों की त्रासद झेलता बच्चा लगता है। शकुन जैसी महत्वाकांक्षी स्त्री, डॉ. जोशी जैसे गम्भीर व्यक्तित्व एवं अजय जैसे अहं पोषित सामन्ती मानसिकता वाले चरित्र सजीव लगते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के मुख्य पात्र 'बंटी' तथा 'शकुन' हैं। उपन्यास की सभी घटनाएं स्थितियां, प्रश्न, विचार, भावनाएं बंटी और शकुन के इर्द-गिर्द गुंफित हुई हैं। उपन्यास की 'जन्मपत्री' में मन्नू भंडारी' ने इस बात की पुष्टि की है—"घर लौटकर मैंने पाया कि बंटी एक आकार ग्रहण करने लगा है। मुझे लगा कि बंटी किन्ही दो-चार घरों में नहीं, आज अनेक परिवारों में सांस ले रहा है-अलग-अलग संदर्भों में, अलग-अलग स्थितियों में। लेकिन एक बात मुझे इन बच्चों में समान लगी और वह कि ये सभी फालतू, गैर-जरूरी और अपनी जड़ों से कटे हैं। किसी एक व्यक्ति के साथ घटी घटना दया, करूणा और भावुकता पैदा करती है, लेकिन जब अनेक जिंदगियां एक जैसे सांचे में ही सामने आने लगती हैं तो दया और भावुकता के स्थान पर मन में धीरे-धीरे एक आतंक उभरने लगता हैं मेरे साथ भी यही हुआ। बंटी कें इन अलग-अलग टुकड़ों ने उस समय मुझे करूणा करूणा-विगलित और उच्छ्‌वासित ही किया था,

लेकन जब सब मिलाकर बंटी मेरे सामने खड़ा हुआ तो मैंने अपने आपको आतंकित ही अधिक पाया। समाज की दिनों-दिन बढ़ती हुई एक ऐसी समस्या के रूप में जिसका कहीं कोई हल नहीं दिखाई देता।.......भावना के स्तर पर उद्वेलित और विगलित करने वाला बंटी जब मेरे सामने एक भयावह सामाजिक समस्या के रूप में आया तो मेरी दृष्टि अनायास ही उसके जन्म देने, बनाने या बिगाड़ने वाले सारे सूत्रों, स्रोतों और संदर्भों की खोज और विश्लेषण की ओर दौड़ पड़ी। संदर्भों से काटकर किया हुआ बंटी का अध्ययन शरत्चन्द्रिय भावुकता भले ही जगा दे, उसे एक वैचारिक धरातल नहीं दे सकता।

इस प्रकार बंटी और शकुन के जीवन के सभी पहलुओं का विश्लेषण, उनसे जुड़े सभी संदर्भ, परिस्थितियां एवं क्रिया कलाप ही उपन्यास के केन्द्र में हैं।

बंटी

बंटी उपन्यास का केन्द्रीय चरित्र है। उपन्यास की कथावस्तु बंटी के इर्द-गिर्द रहती है। सभी घटनाओं का प्रभाव प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बंटी पर ही पड़ता है। वह उपन्यास का मुख्य पात्र है। लेखिका ने बंटी के माध्यम से ऐसे चरित्र की सृजना की है जो अपने परिवेश में फालतू है। स्वयं मन्नू भण्डारी ने स्वीकार किया है कि "शकुन-अजय के आपसी संबंधों में बंटी चाहे कितना ही फालतू और अवांछनीय हो गया हो, परन्तु मेरी दृष्टि को सबसे अधिक उसी ने आकर्षित किया। वस्तुतः उपन्यासकार के लिए अप्रतिरोध चुनौती, सहानुभूति और मानवीय करुणा के केन्द्र सिर्फ वे ही लोग हो पाते हैं, जो कहीं न कहीं फालतू हो गये हैं।" बंटी उपन्यास का मुख्य पात्र है। सम्पूर्ण घटनाक्रम उसी को केन्द्र में रखकर समायोजित हुआ है।

वह बहुत ही संवेदनशील बालक है। वह आपनी संवेदनशीलता के कारण अंतर्जगत में जीवन यापन करता है। उसके अंतर्मन में अनवरत एक स्वप्न चलता रहता है जिसमें वह अपने माता-पिता को एक साथ घर में देखना चाहता है। उसका यह स्वप्न अंत तक पूरा नहीं होता है। मम्मी उसके इसी स्पप्न की पूर्ति हेतु ही डॉ. जोशी से विवाह करती है। तब भी उसके जीवन में पापा के प्यार की कमी बनी रहती है।

बंटी की चारित्रिक विशेषताओं को उपन्यास में बड़े विशद फलक पर चित्रित किया है। उसमें बाल सुलभ सभी सहज गुण विद्यमान हैं। उसका पहला गुण उत्सुक्ता है। वह संसार की प्रत्येक बात जान लेना चाहता है। मम्मी-पापा का क्या झगड़ा है? तलाक क्या होता है? मम्मी कभी-कभी रोती क्यों है?, पौधे कैसे बढ़ते हैं? आदि अनेक बातें उसके दिमाग में घूमती रहती हैं। जादू-तिलस्म और परियों

की कहानियां सुन-सुनकर उसके बालमन में वैसी ही जादुई दुनिया पा लेने की ललक उमड़ती रहती है- "कौन जाने इन पहाड़ियों की तलहटी में कोई साधु बैठा हो, जिसके पास जादू की खड़ाऊ हो, जादू का कमंडल हो, एक बार जाकर जरूर देखना चाहिए।"

उसमें उत्सुकता की भांति ही 'जिज्ञासा भाव' भी अदम्य है। वह एक संस्कारी पढ़े लिखे दम्पति की संतान है। इसलिए साधारण बच्चों की भांति किसी बात को सुगमता से विस्मृत नहीं कर पाता, बल्कि उसकी तह तक पहुंचने का प्रयास करता है। मम्मी-पापा के तलाक की बात जानने के लिए वह मम्मी व बकील चाचा की बातों को छिपकर सुनता है। वह चाचा के कथन 'जब धुरी गड़बड़ा जाती है तो जिन्दगी लड़खड़ाने लगती है' का विश्लेषण कर लेना चाहता है लेकिन आशय समझ न आने पर वह टीटू से समझने के लिए सोचता है परन्तु अपने सहज ज्ञान के आधार पर यह बात मालूम है कि घर की बात बाहर नहीं जानी चाहिए। इसलिए वह मम्मी पापा या घर से संबंधी कोई बात न किसी से करता है, नहीं घर में घटने वाली घटना बाहर किसी को बताता है।

उसमें अधिकर भावना भी सामान्य बालक की भांति ही है। वह अपनी वस्तुओं पर अपना विशेषाधिकार समझता है। चाहे खिलौने हों या उसका बगीचा या फिर मम्मी। वह इन सभी से अत्यधिक प्रेम करने के कारण इनके लिए कोई समझौता नहीं करता। अभि जब उसके खिलौने से खेलने का प्रयत्न करती है तो वह अभि से लड़ने पर उतारू हो जाता है। उससे अपने खिलौने छीनकर अपनी अधिकार भावना सिद्ध करता है। ऐसा ही वह अपनी मम्मी शकुन पर भी अपना एकाधिकार समझता है। मम्मी जब डॉ. जोशी के साथ संबंध स्थापित करती है तो यह बंटी को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होता। "ये मम्मी इतना सटकर क्यों बैठी है डाक्टर साहब से, ऐसे तो कभी मम्मी किसी के साथ नहीं बैठती।" साथ ही मम्मी की एक पल की उपेक्षा भी सहन नहीं कर पाता। इसीकारण मम्मी के विवाह के बाद वह महसूस करता है कि उसे अधिकार से वंचित कर दिया गया है। अभि उसे अपनी मेज पर पढ़ने से रोकता है तो उसे प्रतीत होता है कि अपनी चीज होने पर ही ऐसा अधिकार भाव आ सकता है। डॉ. साहब की डिस्पेंशरी में लगे संतान नियोजन के बोर्ड के आधार पर वह यह निष्कर्ष निकालता है कि वह भी इस घर में फालतू और तीसरा बच्चा है, क्योंकि अभि और जोत तो पहले से ही यहां हैं उनका तो घर है, वह ही बाहर का है जिसका अपना कोई घर नहीं है।

इसके अतिरिक्त असाधारण सूझ-बूझ उसके चारित्रिक गुण है जो उसे सामान्य से विशिष्ठ बना देते है। उसके इन्हीं गुणों के कारण वह उपन्यास साहित्य का

अविस्मरणीय पात्र बन गया है। हालांकि कृष्णबलदेव वैद्य ने बालक की स्थिति पर 'उसका बचपन' उपन्यास की रचना इससे पहले की है जिसमें भी प्रधान पात्र बालक है किन्तु वहाँ वह बालक अपने माता-पिता के साथ रहते हुए आर्थिक अभावों से पीड़ित होता है, परन्तु अंत तक आते-आते परिस्थितियां उसे तोड़ देती हैं जिनका सामना न कर पाने पर वह आत्महत्या का प्रयास करता है। यह पक्ष उसके चरित्र को कमजोर बना देता है। इस कारण वह साधारण पात्र बन जाता है। जबकि बंटी में असहज परिस्थितियों में भी सहज बना रहता है। वह भीतर ही भीतर टूटता जाता है फिर भी इन परिस्थिति को बड़े धैर्य से सामना करता है और सहन करता है। वह इन परिस्थितियों से कभी पलायन करने का प्रयत्न नहीं करता। बल्कि मूक बनकर हर परिस्थिति में क्रियाशील रहता है। यह भाव उसके चरित्र को असाधारणता प्रदान करता है।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में बंटी के माध्यम से बालक के मन की भीतरी परतों को जानने की कोशिश की गई है। इसके साथ ही यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वंटी एक व्यक्ति पात्र है या वर्ग पात्र। वैसे उपन्यासकार ने तो उसे एक वर्ग पात्र ही बनाने का प्रयत्न किया है तभी तो वह 'आपका बंटी' हो गया है। अगर सूक्ष्मता से विश्लेषण करें तो भारतीय परिवेश में सामान्यतः न तो ऐसी पारिवारिक स्थितियां ही अधिसंख्या में मिलती है और न ही हर बालक इतना संवेदनशील होता है जितना बंटी अपने परिवेश के प्रति है। सामान्यतः बच्चे अपने हम उम्र बच्चों के साथ अपनी ही दुनिया में व्यस्त रहते हैं। इसलिए वह वर्ग पात्र होते हुए भी 'व्यक्ति पात्र' ही अधिक है।

बंटी अपने माता-पिता के तनावपूर्ण दाम्पत्य जीवन एवं खण्डित परिवार से असमय ही व्यस्क बन जाता है। पापा के कारण मम्मी को दुखी होते देखकर व मन ही मन संकल्प करता है कि वह मम्मी को कभी नहीं छोड़ेगा- "मम्मी के चरहे पर गहराती हुई उदासी की परतें उसे कहीं हल्के से बेचैन कर देती। उसका मन करता कि मम्मी को पक्के तरह समझा दे कि वह उन्हें किसी तरह की कमी नहीं छोड़ेगा।"

मम्मी के दूसरे विवाह से वह विद्रोह एवं प्रतिशोध की भावना से भर जाता है। वह मम्मी से प्रतिशोध लेने के प्रयास में अपना ही अहित करता जाता है उसकी ऐसी भावना से तंग आकर मम्मी उसे पापा के पास भेज देती है। पापा के पास जाने पर वह उसे हॉस्टल भेजकर अपने दायित्व का निर्वाह कर देते हैं। इस प्रकार माता-पिता के अहं के मध्य पिसता बंटी अंत में हॉस्टल के गलियारे में अपने विघटित घर पर अश्रुपात करने के लिए मजबूर हो जाता है। बंटी के हॉस्टल पहुंचने पर उपन्यास का अंत इस तथ्य को द्योतित करता है कि ऐसी संतान के लिए अब हॉस्टल ही एकमात्र आश्रय स्थल है।

शकुन

शकुन उपन्यास की दूसरी महत्त्वपूर्ण पात्र है। उपन्यास में उसके व्यक्तित्वके तीन पक्ष उभर कर आते हैं एक माँ के रूप में, दूसरा एक पत्नी के रूप में, तो तीसरा एक स्वतंत्र व्यक्तित्व रूप में, लेकिन ये सभी तीनों पक्ष आपस में इतने उलझ जाते हैं कि न तो एक अच्छी माँ ही बन पाती है, न ही पत्नी। इन दोनों पक्षों को निभाते हुए उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व भी विलुप्त हो जाता है। शकुन के रूप में एक ऐसी नारी का चित्रण किया है जो बौद्धिक स्तर पर तो नितांत आधुनिक है। वह अपने अस्तित्व के प्रति अतिरिक्त रूप से सजग है, वहीं भावनात्मक स्तर पर उसके अन्दर एक परंपरागत संस्कारबद्ध भारतीय नारी बैठी है जो उसे न पूर्ण रूप से आधुनिक बनने देती है और न ही परंपरागत भारतीय नारी। इसके साथ ही यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या एक नारी के लिए एक अच्छी माँ या पत्नी बनना ही महत्वपूर्ण है। उसका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं हो सकता? शकुन में स्वतंत्र व्यक्तित्व ही अदम्य चाहता है कि जो उसे केवल पत्नी और माँ बनने से रोकता है। उसकी अकुलाहट, उसके जीवन की घनीभूत वेदना तथा दूसरों को पराजित करने की भावना इसकी स्वतंत्र व्यक्तित्व चेतना के कारण है। साथ ही उसका परंपरागत रूप अपने पुत्र के प्रति ममत्व एवं पति के प्रति निष्ठावान बनाये रखते हैं। अपने आधुनिक दृष्टिकोण के कारण ही वह बंटी को अजय के प्रतिरूप में देखती है, वह बंटी का उपयोग अजय को दंश देने के लिए करना चाहती है। उसको माध्यम बनाकर अपने परिवारिक असंतोष एवं अजय के आक्रोश को समर्पण में बदलना चाहती है। वह अपने अहं रक्षा के लिए बंटी को दांव पर लगाने के लिए तैयार हो जाती है—"हम लोग शायद बंटी को मात्र एक साधन समझते रहे। अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाओं और अपनी-अपनी कुंठाओं के संदर्भ में सोचते रहे। हॉस्टल भेजकर अपने दायित्व का निर्वाह कर देते हैं। इस प्रकार माता-पिता के अहं के मध्य पिसता बंटी अंत में हॉस्टल के गलियारे में अपने विघटित घर पर अश्रुपात करने के लिए मजबूर हो जाता है। बंटी के हॉस्टल पहुंचने पर, उपन्यास का अंत इस तथ्य को द्योतित करता है कि ऐसी सन्तान के लिए अब हॉस्टल ही एक मात्र आश्रय स्थल है।

उसके व्यक्तित्व का यह पक्ष नवीनता लिए हुए है जो उसे परंपरागत नारी से भिन्नता प्रदान करता है।

उपन्यास में शकुन के माध्यम से आधुनिक नारी के द्वंद्व को उभारा गया है। शकुन आधुनिक चेतना सम्पन्न नारी है जो शिक्षित एवं आत्मनिर्भर है। जहाँ शिक्षा ने नारी को बौद्धिकता प्रदान की है, वहीं आत्मनिर्भरता ने उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान किया है। उसकी स्वतंत्र चेतना उसका पति नहीं स्वीकार कर पाता। पति को वह

अधिक दबंग, स्वतंत्र और डॉमिनेटिंग लगती है। स्वतंत्र अस्तित्व चेतना उसे पति की अनुगामिनी बनने से रोकता है। वह अपने निर्णय स्वयं करना चाहती है। यहीं से उसका द्वंद्व पत्नी एवं उसके नारीत्व के मध्य आरंभ हो जाता है। जो उसे अपने पति के अहं के समक्ष झुकने से रोकता है। इसकी परिणति अन्ततः विवाह विच्छेद में होती है। वहीं डॉ. जोशी से विवाह करने पर उसका द्वंद्व मां पत्नी रूप के मध्य उभर आता है। वह डॉ. जोशी से विवाह अपने पूर्व पति अजय को दिखाने की भावना से करती है न कि अपनी सुविधा के लिए। वह सोचती है कि अगर अजय भरा पूरा जीवन जी सकता है तो वह भी अपना जीवन भरा पूरा जियेगी- "अजय को उसे दिखा ही देना है कि वह अगर एक नई जिन्दगी की शुरूआत कर सकता है तो वह भी कर सकती है।" जब उसकी इस आशा में बंटी बाधा उत्पन्न करने लगता है तो वह केवल पत्नी बनकर अपने वैवाहिक जीवन की रक्षा में सन्नद्ध हो जाती है। यहां वह बंटी को अजय के प्रतिरूप में देखती है। उसकी यह भावना उसे अपने बेटे बंटी के प्रति सहज नहीं रहने देती।

इस प्रकार शकुन अपने विवाहित जीवन में पहले अजय के साथ अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के एहसास बोध के कारण सहज एवं संतुष्ट नहीं रह पाती तो वही डॉ. जोशी के साथ बंटी के असहयोगपूर्ण व्यवहार के कारण असहज रहती है। पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था में शायद नारी की यही परिणंति निश्चित है कि वह अपने अहं या अस्तित्व को पूर्ण विलीन कर पति के अहं का पोषण करती हुई मात्र उसकी अनुगामिनी बनी रहे। यहां डॉ. विमल शर्मा के शब्दों में कह सकते हैं कि "शकुन का चित्रण आधुनिक दृष्टि का परिणाम है। आज जीवन के प्रति किस प्रकार दृष्टिकोण स्वस्प कहलायेगा? डॉ. जोशी के साथ रहने का निर्णय बंटी के विपरीत जाता है क्या इसलिए वह घृणा का पात्र हो सकती है। एक मानवी के रूप में उसे जीवन नये सिरे से शुरू करने का कोई हक नहीं? यहां यह सवाल उठाना आवश्यक है कि हमारी पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था का शिकार क्या केवल नारी को ही होना है।

भारतीय नारी बौद्धिक स्तर पर कितनी ही आधुनिक हो गई हो लेकिन भावनात्मक स्तर पर वह अभी भी परंपरागत संस्कारों से युक्त है। इसीलिए वह भावनात्मक संबंधों के टूटने पर स्वयं भी टूट जाती है। शकुन भी बंटी व अजय से भावनात्मक स्तर से जुड़ी थी। उनके जीवन से चले जाने के बाद वह स्वयं को रिक्त महसूस करती है। इस प्रकार दूसरे विवाह का निर्णय उसके लिए पीड़ादायक तथा कष्टकारक बन जाता है। वस्तुतः यह भारतीय समाज की विडम्बना ही है कि पुनर्विवाह पुरुष के जितना सहज होता है स्त्री के लिए उतना ही कष्टकारक होता है।

अतः लेखिका ने आधुनिक शिक्षित आत्मनिर्भर नारी के अहं से उभरते हुए द्वंद्व को बखूबी प्रस्तुत किया है। क्यों एक नारी को अपनी पहचान के लिए सदैव अपने पति या पुत्र पर निर्भर रहना पड़ता है? क्योंकि समाज स्त्री की पुरुष निरपेक्ष छवि स्वीकार नहीं कर पाता है? शकुन जब पत्नी और मां से अलग अपने स्वतंत्र अस्तित्व के साथ जीना चाहती है तो अजय और बंटी दोनों को यह गवारा नहीं होता। इस तरह वह अंतर्द्वंद्व से ग्रस्त रहती है। शकुन का चरित्र बहुत जटिल रूप में सामने आता है। प्रथम दृष्टि में शकुन का व्यवहार सामान्य प्रतीत होता है जिसमें कोई समस्या नही है। वह सामने उपस्थित परिस्थितियों में एक सामान्य नारी की भांति व्यवहार करती है। किंतु अगर सजग दृष्टि से उसका विश्लेषण किया जाए ता यह स्पष्ट होता है कि उसके क्रिया कलाप उसकी सोच उसके निश्चय इतने भी सामान्य या अनजाने में किए हुए नहीं है जैसे वे प्रतीत होते हैं। इस संदर्भ में डॉ. निर्मला जैन का मत है कि " आपका बंटी की जो विशेषता उसे अधिक महत्वपूर्ण और सार्थक बनाती है वह भावोहोलन नहीं है बल्कि शकुन की जटिल चरित्र सृष्टि है जिसके कारण इसकी वस्तु के ट्रीटमेंट में व्यंजना की कला का अत्यंत प्रौढ़ रूप मिलता है। लेखिका की दृष्टि में शायद यह उपन्यास का अभिप्रेत नहीं है। शकुन के चरित्र का सीधा-सपाट न रहकर अत्यंत जटिल हो जाना भले ही लेखिका के लिए गौंण वस्तु रही हो पर इस उपन्यास को एक प्रौढ़ और सार्थक रचना बनाने में उसकी इस विशेषता का बहुत बड़ा हाथ है।"

अतः शकुन का चरित्र नई स्त्री का चरित्र है। उसके जीवन का सत्य है कि स्त्री की जायज महत्वाकांक्षा और आत्मनिर्भरता पुरुष के लिए चुनौती है- नतीजे में दाम्पत्य तनाव उसे अलगाव तक ला छोड़ता है। यह सच केवल शकुन का नहीं है बल्कि हर उस स्त्री का है जो समाज में अपनी जगह बना रही है और कद बढ़ा रही है।

प्रमुख पात्रों के पश्चात् उपन्यास में दूसरी महत्वपूर्ण भूमिका पार्श्वभौमिक पात्रों की होती है। इन पात्रों का महत्व यद्यपि क्षणिक होता है तथापि विश्वसनीय सामाजिक संदर्भों के निर्माण में इनकी उपस्थिति आवश्यक होती है। 'आपका बंटी' में 'फूफी', 'अजय', 'मीरा', टीटू ऐसे ही पात्र हैं। अजय की उपस्थिति स्थितियों को स्पष्ट करने के अतिरिक्त कोई कार्य नहीं करती। फूफी समय-समय पर शकुन तथा बंटी के जीवन में आने वाले परिवर्तनों की ओर इंगित करती है। 'टीटू- बंटी का मित्र है जो समय-समय पर बंटी की स्थितियों को समझने का या उन पर दृष्टिपात करने का आधार प्रदान करता है।

पात्रों की तीसरी श्रेणी माध्यमिक पात्रों की है। यह वह पात्र होते हैं जिनका अंकन पर्याप्त विस्तार के लिए होता है। फिर भी ये पात्र उपन्यास में साधन रूप

ही होते हैं, साधक नहीं। यह पात्र रचना में एक या एकाधिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आते हैं। ये कभी मुख्य पात्र एवं समाज के बीच सेतु का कार्य करते हैं तो कभी मुख्य पात्र के दोषों या गुणों पर प्रकाश डालते है। प्रस्तुत उपन्यास में वकील चाचा शकुन को मार्गदर्शन एवं सुझाव देते हैं कि "तुम लोग अपने को, अपने इगो को ऊपर न रखकर बंटी को ऊपर रखो।" इस प्रकार माध्यमिक पात्रों की भूमिका भी उपन्यास की कला वस्तु के विकास में महत्वपूर्ण है। कथानक के विकास में उसके चरित्रों का योगदान महत्वपूर्ण है। 'आपका बंटी' का कथानक भी बंटी, शकुन, अजय, डॉ. जोशी, मीरा के माध्यम से विकसित होता है।

डॉ. जोशी

डॉ. जोशी का व्यक्तित्व गम्भीर, सुलझे हुए, समझदार व्यक्ति का है। वह बड़ी से बड़ी समस्या को आसानी सुलझा लेते हैं। वह तटस्थ होकर शकुन तथा बंटी की स्थितियों का आकलन करते है। उनकी यह चारित्रिक विशेषता शकुन को तसल्ली तथा अपनत्व का बोध करती है। "डॉ. जोशी की बातों में, उसके सारे व्यक्तित्व में कुछ ऐसा है जो शकुन को आश्वस्त करता है। डॉ. जोशी की सुलझी दृष्टि उसे बहुत सी उलझनों से उबार लेती है।" डॉ. जोशी का व्यक्तित्व स्पष्टतावादी है। वह अपनी हर बात स्पष्ट शब्दों में और अपेक्षित गंभीरता के साथ कहते हैं। बंटी और शकुन के संबंधों के विषय में बहुत स्पष्टता से कहते हैं–"यह तुम माँ-बेटे का चूमने-चाटने और गले में बाँहें डालकर लिपटने वाला जो रवैया है वह अब बंद होना चाहिए। लगता है, तुम अपनी इस अर्ज को भी बंटी के साथ ही पूरा करती हो।" डॉ. जोशी अपनी समझदारी से बंटी में आते परिवर्तन को भांप लेते हैं। यही वजह है कि वह बंटी के रवैये को शकुन को समझाते हुए कहते है कि–"तुम्हारे साथ अकेले रहते-रहते वह बहुत पजेसिव हो गया है। वह किसी को तुम्हारे साथ नहीं देख सकता......तुम्हें बहुत ही धीरज से काम लेना चाहिए। जानती हो, इस तरह से बच्चों के साथ सख्ती करने से वे एकदम चुप्पे हो जाते हैं, बहुत ही सबमिसिव और सहमें हुए और नरमाई से पेश आने से वे उद्दंड हो जाएंगे।"

बंटी के बढ़ते आक्रोश पर भी डॉ. जोशी अपना संतुलन नहीं खोते तथा शकुन को समय-समय पर समझाते रहते हैं। डॉ. जोशी एक डॉक्टर की नजर से बंटी की समस्या को देखते हैं तथा उसके कारणों से शकुन को अवगत करते रहते हैं। बंटी को लेकर वह शकुन को सांत्वना भी देते रहते हैं। इस प्रकार डॉ. जोशी की उपस्थिति सहायक पात्र के रूप में होती है।

फूफी : फूफी शकुन के यहाँ नौकरानी का काम करती है। वह शकुन तथा बंटी से जुड़ी हर समस्या पर गहरी दृष्टि रखती है। वह बंटी में हो रहे परिवर्तनों को

पहचानकर शकुन को आगाह करती रही है। वह अतिरिक्त रूप से बंटी से जुड़ी है। इसलिए बंटी के प्रति शकुन के बदलते रवैये से फूफी चिन्तित होती है। वह शकुन एवं जोशी के रिश्ते को लेकर स्पष्ट कहती है कि–"साहब ने जो किया तो आपकी मट्टी-पलिद हुई और अब आप जो कर रही है इससे बच्चे की मट्टी पलिद होगी। चेहरा देखा है बच्चे का। कैसा निकल आया है, जैसे रात दिन घुलता रहता है भीतर ही भीतर।".......हमारा बंटी भय्या को जैसा बिसरा दिया है आजकल, वैसा और मत करना। बाप के रहते यह बिना बाप का हो रहा, अब माँ के रहते यह बिना माँ का न हो जाए।

फूफी का यह डर अंत में सच साबित होता है। हालांकि फूफी की उपस्थिति उपन्यास में बहुत कम समय तक रहती है फिर भी उसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

वकील चाचा

वकील चाचा उपन्यास में दोहरी भूमिका में होते हैं एक तरफ वह शकुन तथा अजय के वकील हैं तो दूसरी तरफ उनका शकुन के साथ आत्मीयता का रिश्ता रहता है। वह जहाँ शकुन के तलाक का मुकदमा लड़ते हैं वही दूसरी तरफ वह शकुन के नये सिरे से जीवन शुरू करने की सलाह भी देते हैं–"अगर अजय अपनी जिंदगी की नई शुरूआत कर सकता है तो तुम क्यों नहीं कर सकती? क्यों अपने को इतना बांध-बांध कर रखती हो? आखिर प्रिंसिपल होने के नाते यहां के म्द्र समाज में तुम्हारा उठना-बैठना होगा ही, इस दृष्टि से कभी...."पर इतना जरूर कहूंगा कि तुम केवल बंटी की माँ ही नहीं हो, इसलिए केवल बंटी की माँ की तरह ही मत जिओ शकुन की तरह भी जिओ।"

वकील चाचा इसी आत्मीयता के कारण शकुन के जीवन के विविध पहलुओं पर गंभीरता से विचार करते हैं। उसे समाज की कटु सच्चाइयों से अवगत कराते हुए अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हैं। "जरा आज से आठ-नौ साल बाद की बात सोचो जब बंटी की अपनी जिंदगी होगी। तब तुम्हारा कितना आस्तित्व होगा उसकी जिंदगी में?.....और तुम उसके स्वतंत्र आस्तित्व को समाप्त करके उस पर हावी होने की कोशिश करोगी और या फिर अपने को बहुत ही उपेक्षित और अपमानित महसूस करोगी।.....उस समय तुम्हें बुरा लगेगा। आज अजय को लेकर तुम्हारे मन में कटुता है हो सकता है कि वही फिर बंटी को लेकर हो....और आज से दस गुना ज्यादा हो।"

वह निस्वार्थ भाव से शकुन तथा बंटी का हित सोचते हैं। बंटी के स्वस्थ विकास के लिए बंटी के हॉस्टल भेजने की बात करते हैं और उसे एक ग्रोइंग बॉय

की तरह विकास करने का सुझाव देते हैं—"बंटी को तुम्हें एकदम हॉस्टल भेज देना चाहिए। इट इज एक मस्ट। जरा सोचो, स्कूल के अलावा बंटी सारे दिन तुम्हारे साथ रहता है या तुम्हारी उस फूफी के साथ.....यानि इसकी क्या कम्पनी है? बहुत हुआ पड़ोस के एक दो बच्चों के साथ खेल लिया। एक आठ-नौ साल के ग्रोइंग बच्चे के लिए यह कोई बात नही हुई न? ही शुड ग्रो लाइक ए बॉय, लाइक एक मैन।" इस प्रकार वकील चाचा की उपस्थिति एक विशेष महत्व रखती है। शकुन के भावी जीवन के निर्णयों की पृष्ठभूमि में वकील चाचा के सुझावों की महत्वपूर्ण भूमिका है।